

हम सभी समाज के बो हिस्से हैं जिसे कभी काटा नहीं जा सकता, अलग नहीं किया नहीं जा सकता। उसको अलग तरीके से देखा नहीं जा सकता। लैकिन इतने सारे समाज में वर्ग हैं, इतने सारे लोग समाज में काम कर रहे हैं सभी अपने-अपने घरों में, अपने-अपने कामों में, अपने-अपने ऑफिस में व्यस्त हैं। लैकिन जिंदगी के कुछ ऐसे निर्णय होते हैं जो शुरू में कुछ वर्षों के बाद लेने पड़ते हैं लैकिन वो निर्णय लेने में कई बार जल्दी होती है तो कई बार देर हो जाती है। लैकिन कई जो इस निर्णय को जल्दी ले लेते हैं वो जीवन में शायद वो कुछ कर पाते हैं जो उनको करना चाहिए। लैकिन कई बार निर्णय लेने में देरी हो जाती है और वो निर्णय सही है, गलत है का फैसला भी हम शायद अंतर्रूद्ध की स्थिति में करते हैं। वो निर्णय जो हम लेते हैं उससे हम कई बार मात भी खा जाते हैं। तो आज का जो विषय है इसी गूढ़ प्रश्न को लेकर है कि निर्णय आखिर ले कौन सकता है।

आध्यात्मिकता एक साइलेन्स है। जब हम गहरी शांति के साथ बैठकर किसी भी चीज़ को सोचते हैं, महसूस करते हैं तो हमको बहुत सारे प्रश्नों का हल मिलता है। अगर पूरी दुनिया को थोड़ा-सा दूर से देखते हैं कि हर कोई किसी न किसी बन्धन से जकड़ा हुआ है या जुड़ा हुआ है। बन्धन से जकड़ा ही होता है ख़ेर जुड़ा तो होता नहीं। और जब भी कोई व्यक्ति कोई कार्य कर रहा होता है तो कोई न कोई उसका मौटिव होता है, कोई न कोई उद्देश्य होता है, कोई न कोई ज़खरत होती है, कोई न कोई नियत होती है उसी आधार से जुड़ता है तो व्यक्ति जब ये सब कर रहा होता है तो किसी न किसी के

A man in a dark suit and blue shirt is holding a large black question mark. He has his hand to his chin, looking thoughtful.

जीवन में निर्णय कौन ले सकता है...!

लिए कर रहा होता है। एक सोच, एक संकल्प चला कि इस दुनिया में कन्फ्यूज़ कौन है और शक्तिशाली कौन है! दोनों को हम अलग-अलग दायरों से चेक करते हैं। इस दुनिया में शक्तिशाली वो है जो इंसान निर्बंधन है, बंधनमुक्त है मन से। तन से नहीं भी हो सकता है लेकिन मन से तो खैर हो ही सकता है। तो जो व्यक्ति बंधनमुक्त है वो हमेशा बंधनमुक्त है।

मतलब जिस व्यक्ति के दिल में इस दुनिया का कोई भी व्यक्ति, कोई वैभव, कोई पदार्थ, उसके किसी भी चीज़ के लिए आड़े नहीं आता हो, वो व्यक्ति बहुत शक्तिशाली है। लेकिन जिस भी व्यक्ति को इस दुनिया में आगे बढ़ने का भाव है, मन करता है, बहुत कुछ उमंग-उत्साह लेने का मन करता है, कहीं कुछ जु़दाव है, आसक्ति है, आर्कषण है, बहुत गहरा लगाव है वो व्यक्ति कभी भी इस दुनिया में एक निष्पक्ष रूप से निर्णय लेने में असमर्थ होता है।

अपने पूर्वाग्रह की स्थिति से ब्रह्म और तनाव ग्रस्त रहता है कि क्या होगा। सबसे पहले उसको अपनी फैमिली, अपना बैंकग्राउंड याद आता है। बाद में उसको समाज और सोसाइटी की स्थिति याद आती है।

तो आप पूरी दुनिया को ऐसे ऑब्जर्व करके देखें, बड़े ध्यान से देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि चाहे वो आध्यात्मिकता के क्षेत्र में ही क्यों न हो। चाहे वो कितना ही गहराई से आत्मा को जानता हो, समझता हो लेकिन समझने के बावजूद भी अगर उसके निर्णय लेने में कहीं असक्षम स्थिति है तो उसका कारण है आसक्ति, आकर्षण। कहीं न कहीं गहरा लगाव। और वो लगाव उसको निर्णय लेने नहीं देता। अगर निर्णय लेता भी है तो वो द्विकाव वाला लेता है, एक तरफा लेता है और हमेशा अपने आप को फंसा हाता महसूस करता है। तो खुशी का

जो दायरा है वो बंट जाता है। खुशी कभी बांटी नहीं जाती। खुशी का कभी बटवारा नहीं होता। लेकिन मैंने आपकी खुशी के लिए किया, मैंने इस बात के लिए किया, नहीं। कहते हैं समाज एक सोशल फैक्ट है। इंग्लिश में कहावत है सोसाइटी के सोशल फैक्ट। मतलब सामाजिक तथ्य क्या कहता है हर कोई समाज को ज़िम्मेदार ठहराता है। लेकिन समाज हमसे है, हम समाज से नहीं। तो

हमारा नियन्य समाज
निर्धारित करता है।

हम अगर समाज के दायरों को देखकर निर्णय लेने लग गये तो आपने कल्याण को

भूल जायेंगे। समाज के कल्याण को भूल जायेंगे, देश के कल्याण को भूल जायेंगे और स्थिति बदल जायेगी। आज समाज डिसाइड कर रहा है हमें निर्णय लेने में। माना जो हमारा खुद का समाज है, जिनके बीच में हम रहते हैं, पलते हैं, बढ़ते हैं वो लोग हमारे लिए निर्णय लेते हैं और हम भी उनके लिए निर्णय लेते हैं इसलिए पूरी जिंदगी दुःखी रहते हैं।

तो निर्णय इस दुनिया में बोले सकता है जो निष्पक्ष हो, जो बंधनमुक्त हो, जो अपने आपको कल्याणकारी भाव से रखता हो, जो कल्याणकारी सोच वाला हो, जो बेहद की सोच वाला हो वो व्यक्ति कभी भी इस दुनिया में असफल नहीं हो सकता। इसीलिए अगर निर्णय लेना है तो बेहद की सोच और बेहद के कल्याण की बात को लेकर आगे बढ़ें और जीवन में सफल हों।



ब्र.कृ.अनुज,दिल्ली

उपलब्ध पुस्तकें



अनुभव - मेरा नाम भैरव नाथ है। मेरा अपनी साथी टीचर से चार महीने पहले झगड़ा हो गया था। मैंने आपके समाधान कार्यक्रम में क्षमा करने और क्षमा मांगने की बात सुनी तो मैंने सुबह उठकर ये प्रयोग किया। चार दिन मैंने ये प्रयोग किया और पांचवें दिन ही मेरे साथी टीचर का फोन आ गया मुझे माफ करना मुझसे गलती हुई। मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। मुझे जैसे अपने कानों पर तो विश्वास ही नहीं हुआ कि ये कैसे हो गया। मैं उनसे मिलने जा ही रहा था कि मेरी पत्नी ने मुझे रोका मत जाओ घर में कुछ काम है। मैं नहीं जा पाया लेकिन वो खुद ब खुद मेरे घर पर आये। सचमुच मैंने ये पाया कि राजयोग के प्रयोग अद्भूत हैं, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रश्न : मैं रेलवे से रिटायर्ड वन्द्रकिशोर गाकुट हूँ। सभी बच्चे बेल सेटल हैं। घर में भी सभी सुख-सुविधाओं के साथ हैं। किसी जीज़ की कोई कमी नहीं है। लेकिन फिर मी मेरा मन बहुत परेशान रहता है। कई बार तो मैं अकाशों ही बहुत परेशान हो जाता हूँ। इसका क्या कारण है, क्या मामूली काल गमावत है?

उत्तर : मैं आपको सबसे पहले राजयोग सीखने की सलाह दूँगा और सिर्फ राजयोग ही नहीं बल्कि आप रोज सेवाकेन्द्र पर जाकर ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण करें। ये जो आपको परेशानी रहती है, खुशी नहीं रहती या बिना मतलब मन उचाट-सा रहता है, इसके कई कारण हो सकते हैं। निर्गेटिव थिंकिंग हो सकती है। आप फ्री रहते हैं तो आग टीवी ज्यादा देखते हैं तो भी ये कारण बन सकता है। क्योंकि आजकल टीवी, इंटरनेट पर बहुत निर्गेटिव चीजें आ गई हैं जिनके लोग शिकार हो रहे हैं। और दूसरा कारण जो देखने में आता है कि जन्म-जन्म का जो कार्मिक अकाउंट होता है। हमने हजारों साल से जो कर्म किए हैं वो सबकार्माण्डियस माइड (अवचेतन मन) में प्रिंट हैं, छुपे हुए हैं तो उनसे निर्गेटिव एनर्जी बहुत निकल रही है क्योंकि मनुष्य के पाप ज्यादा रहे और पुण्य कम। विकारों को भी हम पाप ही कहते हैं। विकार और पाप दोनों मिक्स होकर सबकार्माण्डियस माइड में जो स्टोर हैं, भरे हुए हैं उनसे जो लगातार निर्गेटिव एनर्जी ब्रेन को पहुंच रही है वो भी मनुष्य को कहीं न कहीं परेशान करती रहती है। इसलिए आग आप ईश्वरीय ज्ञान लेंगे तो आपको रोज नये थॉट्स मिलेंगे, और जीवन जीने का एक नया तरीका मिलेगा। आपके पास जो फ्री टाइम रहता है उसको कुछ अच्छे कार्यों

में, सेवाओं के कार्य में लगाने का आपको प्लान मिलेगा, एक अच्छी प्लानिंग मिलेगी। और जब आप राजयोग का अच्छे से अभ्यास करेंगे तो आपके अन्दर जो निर्णीटिव एनजी है या फिर जो कार्मिक अकाउंट हैं, बुरी चीजें जो सबकाँशियस माइंड में भरी हुई हैं वो क्लीन होती जायेंगी और आपका मार्ग सफ़ होता

मन
की
बातें



- यजयोगी ब्र.कु. सूर्य

जायेगा। और आप अपनी जीवन की अंतिम यात्रा को एन्जॉय करेंगे।

प्रश्न : मेरी बेटी ने दो मास पहले 12वीं वर्षास का रिजल्ट आने के बाद सुसाइड कर लिया। वो पास हो गई थी। परिवार की तरफ से भी उत्साह कोई दबाव भी नहीं था। उसके सभी दोस्तों से भी हमने बात की लैकिन ऐसी-बैटी कोई बात नहीं थी। हमारी समझ में ही नहीं आ रहा कि उसने ऐसा क्यों किया। घर का माहोल तब से बहुत गमगीन रहता है। मैं बाबा के ज्ञान में हूँ लेकिन मन बहुत अशांत हो गया है, क्या करूँ?

उत्तर : क्या होता है, सुसाइड करने के बाद आत्मा भटक जाती है, उसको पुनर्जन्म नहीं मिलता। उसे कुछ अच्छे वायब्रेशन्स की जरूरत होती है जिससे उसका मन शांत हो जाये। चाहे उसने सुसाइड इमोशनल होके कर लिया हो। जो कुछ भी किया तब आत्मा बहुत पछताती है। क्योंकि जब उसे पुनर्जन्म नहीं मिलता है तो इसी कारण से वायब्रेशन्स बहुत निगेटिव रहते हैं क्योंकि बहुत बार वो वहीं विचरण करती है। अब वो हैल्प चाहती है लेकिन मांगे कैसे। उसके पास अब शरीर नहीं है। वो आवाज़ नहीं दे सकती। जैसा कि हम बहुत बार कहते आये कि कोई भी व्यक्ति जब सुसाइड करता है तो उसकी अंतिम स्थित जो होती है दुःखभरी, बहुत अशांति की होती है। वो वैसी ही बनी रहती है। तो उसके बायब्रेशन्स घर में आते रहते हैं। इसलिए घर का वातावरण बड़ी गमरीन, त्रस्त रहता है। आपने राजयोग सीखा है।

तो मैं आपको राय दूँगा कि दिन में दो बार आधा-आधा घंटा अपने घर में मेडिटेशन करेंगे। और उस आत्मा के लिए शांति के वायब्रेशन्स देंगे। ताकि उसका चित्त शांत हो जाये। अब ज़रूरत इस चीज़ की है उसका चित्त शांत होगा तो आपका चित्त भी शांत होगा। उसको पुनर्जन्म मिलेगा तो आप भी निश्चित हो जायेंगे। जैसे घर का व्यक्ति कोई भटक रहा हो और उसको ठिकाना मिल जाये तो घर वालों का चित्त भी शांत हो जाता है, निश्चित हो जाते हैं। तो जब उसको ठिकाना मिलेगा तब आपके चित्त को भी चैन आ जायेगा। पहले 21 दिन करें। फिर 21 दिन करें और फिर 21 दिन करें। तीन बार 21-21 दिन, आप अपने घर में इस तरह के गुड वायब्रेशन्स, शांति के वायब्रेशन, प्यारिटी के वायब्रेशन फैलाने के लिए मेडिटेशन करें। लेकिन आप उस आत्मा के लिए कुछ पुण्य भी करें। और पुण्य में बहुत बड़ा पुण्य होता है कि भगवान को भोग लगवा देना उनके निमित्त। तो परमात्म ब्लैंसिंग भी उसे मिलने लगती हैं और उसका चित्त भी शांत होने लगेगा। दूसरा उसके निमित्त पवित्र आत्माओं को, ब्राह्मण आत्माओं को ब्रह्मा भोजन खिला देना ये बहुत बड़ा पुण्य है। ये सब कार्य आपको अवश्य करने चाहिए।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

**मन की खुशी और सत्त्वी शाति के लिए देखें आपका
अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल**

